समय बड़ा बलवान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

कालचक्र महान है, चिरन्तन है, शाश्वत सत्य है। इसका प्रवाह अबाधगति से प्रवहमान है। सामान्य स्थिति में इसका ठहराव नहीं। विकास का आकलन इसी के कारण होता है। भूत, वर्तमान और भविष्य का वर्गीकरण भी इसी पर निर्भर है। जीवन का परिवर्तन और सफलता का मूल्यांकन इसी के कारण है। वर्ष, महीना, सप्ताह, घण्टा, मिनट और सैकेण्ड आदि इसी के अंग है। मनुष्य के जीवन में परिवर्तन का आकलन भी इसी से होता है। इसकी विधि गति निराली है। अपने एक क्षण में किसी को मुखरित कर देती है तो किसी को रूला देती है। किसी के जीवन को हिमालय के उत्तुडग शिखर के समान महान बना देती है तो किसी के जीवन में समुद्र की तरंगों की तरह उथल–पुथल उत्पन्न कर देती है। किसी ने तो हर्षित होकर तुम्हें गले लगाया तो किसी ने अपने मनमन्दिर में तुम्हारे प्रति नफरत का बीज बो लिया। तुम समान होते हुए भी लोगों को असमानता की दृष्टि से देखते हो। क्या तुम्हारी पहचान विविधता से करें या एकता से ? तुम्हें दुःखोत्पादक समझें या सुखसर्जक? तुम्हें सफलता की कड़ी मानें, या असफलता की बेड़ी। वैसे तुम अनादि, निस्सीम किन्तु विभाज्य हो। डेकार्ट, लाइबनित्ज आदि दार्शनिक तुम्हें मनस से स्वतंत्र वस्तुगत मानते हैं तो लाक, वर्कले और ह्यूम आदि दार्शनिक आत्मगत किन्तु अनुभववाद और बुद्धिवाद के समन्वयकर्त्ता, जर्मन के सुप्रसिद्ध दार्शनिक इमेन्युअल काण्ट ने तुम्हें अनुभवपूर्व सांचा मानकर ज्ञान के लिए समस्त अनुभवों को तुममें ही समाहित माना है। इस प्रकार मानव जीवन में समय का बहुत महत्व है। जिसने अपने जीवन में समय का सदुपयोग किया उसकी उन्नति होती है और जिसने समय का दुरुपयोग किया या समय को नष्ट किया, उसको समय नष्ट कर देता है। समय बड़ा बलवान होता है।

समय का विवेचन साहित्यिक, धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से किया जा सकता है। साहित्यिक दृष्टि से समय या काल का विवेचन अनेक साहित्यकारों ने किया है। कबीरदासजी

ने संसार को काल का चबैना बताया है– जगत् चबैना काल का कुछ मुख में कुछ गोद। संसार काल का चबैना है, कुछ को तो काल ने चबा डाला है और कुछ उसकी गोद में बचा हुआ है। समय आने पर उसको भी काल चबाकर समाप्त कर देगा। इस प्रकार काल एक ऐसा तत्व है जो सबके साथ समान रूप से बर्ताव करता है। काल की दृष्टि में सब बराबर है। धार्मिक दृष्टि से काल का महत्व धर्मकर्म के लिए किया जाता है। कुछ दिन या कुछ मास धार्मिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होते है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि महीनों में माघ का महीना हूं। इसी से पता चलता है कि धार्मिक दृष्टि से भी काल का महत्व है। कुछ दिनों या कुछ महीनों में दान या पुण्य का कर्म अधिक फलदायी होता है। दार्शनिक दृष्टि से भी काल का विवेचन किया गया है। दार्शनिक दृष्टि से काल अनुमेय है। परिवर्तन के द्वारा काल का ज्ञान होता है। बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था में परिवर्तन निरन्तर चल रहा है। इसी से अनुमान किया जाता है कि इस परिवर्तन के पीछे काल ही कारण है। अतः काल का हर दृष्टि से महत्व है। जिसने काल का सदुपयोग कर लिया वहीं श्रेष्ठ बन जाताह है। द्रौपदी के स्वयंवर के समय अनेक राजे, महाराजे और धनुर्धर सभा में एकत्रित हुए थे। सभी ने अपनी शक्ति और पराक्रम से निर्धारित शर्त के अनुसार लक्ष्य को भेदना चाहा लेकिन सफलता अर्जुन को मिली। अर्जुन ने देशकाल और परिस्थिति के अनुसार अपनी शक्ति का संचय कर लक्ष्य को भेदा। जब अर्जुन से पूछा गया कि आप क्या देख रहे हो तो अर्जुन ने कहा कि इस समय मैं केवल मछली की आंख देख रहा हूं जिस पर हमें शरसंधान करना है। अर्जुन का पराक्रम सही दिशा में किया गया था और उन्होंने सफलता प्राप्त की। समय के अनुकूल कार्य करना चाहिए। आज का किया गया कर्म ही भाग्य या पुरुषार्थ बनता है और पुरुषार्थ के परिणाम के अनुसार ही हमें इस जीवन में फल भोगना पड़ता है। जिसने पूर्वजन्म में अच्छा कर्म किया है उसको अच्छा फल मिलता है और जिसने बुरा कर्म किया है उसे बुरा फल मिलता है। भारतीय संस्कृति का यह विश्वास है कि कर्म अपना फल दिये बिना समाप्त नहीं होता। यह धर्म प्रधान संस्कृति है। आत्मा और पुनर्जन्म में विश्वास करती है। चार्वाक अनात्मवादी दर्शन है। चार्वाक का मानना है कि आत्मा पंचतत्वों के मिश्रण से अपने आप बन जाती है। अतः आत्मा भी भौतिक है। किन्तु अन्य आत्मवादी दर्शन ऐसा नहीं मानते। उनके अनुसार आत्मा

सच्चिदानंद स्वरूप है। यह घट–घट व्यापी है। इसी के द्वारा संसार का प्रत्येक कार्य हो रहा है।

काल के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि वास्तव में काल ही बलवान होता है मनुष्य नहीं। भगवान् राम को चौदह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा और वहां पर उन्होंने मर्यादा की रक्षा के लिए पूरे तन–मन से प्रयास किया। कोई भी कार्य कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। यदि काम को करना है तो उसे तत्काल को कर डालना चाहिए। क्योंकि आने वाले क्षण में क्या स्थिति रहेगी इसे कोई नहीं जानता। समय से पहले और भाग्य से अधिक किसी को कुछ भी प्राप्त नहीं होता। वृक्ष को यदि आज रोपण किया गया है तो समय पर ही वह फल देगा। कितना भी प्रयास किया जाये वह समय से पहले फल नहीं दे सकता। कार्य को करने के लिए योजनाबद्ध होना जरूरी है।